डा० करुणा राय
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०जी०जी० एस०एस० कॉलेज
पटना सिटी
Email- karuna-1812@yahoo.co.in

स्नातक प्रतिष्ठा द्वितीय खंड-चतुर्थ पत्र

इकाई - 3

नयी कविता तथा नवगीत

आप सभी आधुनिक कविता के विविध चरणों का पुनर्पाठ (Revison) कर चुके हैं। इस क्रम में आपने छायावाद के पश्चात प्रगतिवाद एवं प्रयोगवाद का अध्ययन भी कर लिया है। इस इकाई में आपको नयी कविता तथा नवगीत के बारे में बताया जायेगा। सर्वप्रथम इन दोनों प्रवृत्तियों की संक्षिप्त रूपरेखा दी जायेगी तथा बाद में इसकी विशेष प्रवृत्तियों का उल्लेख किया जायेगा। इस तरह पूर्व में कक्षा में पढ़ाये गये विषय को दुबारा पढ़ने का अवसर भी मिलेगा। अपनी शंकाओं का समाधान आप आनलाइन जुड़कर हमसे कर सकते हैं।

नयी कविता इस प्रवृत्ति का प्रारंभ प्रयोगवाद से ही माना जा सकता है जब अज्ञेय ने 1943 ई० में तार सप्तक का प्रकाशन किया। इसी प्रयोगवाद की विकसित कड़ी 'नयी कविता' को माना जा सकता है। यह प्रयोगवाद से इस अर्थ में भिन्न (अलग) है कि इसमें प्रयोग पर बल नहीं दिया गया है बल्कि नयेपन की तलाश काव्य के अन्य अवयवों - बिम्ब, प्रतीक, भाव, भाषा एवं शैली में भी की गयी है। प्रारम्भ में, जब कि कवियों का दृष्टिकोण एवं लक्ष्य स्पष्ट नहीं था, नवीनता की खोज के लिए केवल प्रयोग की घोषणा की गयी थी तो इसे 'प्रयोगवाद' कहा गया। 'नयी कविता' को प्रयोगवाद से अलग मानने वाले विद्वान इसकी परम्परा का सूत्रपात डॉ० जगदीश गुप्त एवं रामस्वरूप चतुर्वेदी की 'नयी कविता' नामक पत्रिका के प्रकाशन से मानते हैं। 1954 ई० में इन दोनों कवियों के संपादन में नयी कविता काव्य संकलन का प्रकाशन हुआ। इसके पश्चात इसी नाम के पत्र पत्रिकाओं तथा संकलनों के माध्यम से यह काव्यधारा निरंतर प्रवाहित होती जा रही है।

'नयी कविता' के अंतर्गत हिन्दी की वे कवितायें आती हैं जिनमें परंपरागत कविता से आगे नये भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नये मूल्यों और नये शिल्प-विधान का अन्वेषण किया गया। इसे प्रगतिवाद और प्रयोगवाद दोनों का विकसित रूप माना जा सकता है। नयी कविता नयी मनःस्थिति का प्रतिबिम्ब है। उसके केन्द्र में मानव की प्रतिष्ठा है। मानव के व्यक्तित्व विकास एवं उसके आर्थिक सामाजिक संबंधों की चर्चा ही नयी कविता का प्रमुख प्रतिपाद्य है। नयी कविता द्वारा एक ऐसे मानव की प्रतिष्ठा का प्रयास किया गया जो स्वस्थ सामाजिक जीवन-दर्शन की खोज के लिए प्रतिबद्ध है।

नयी कविता के मुख्य कवियों में सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', गिरिजाकुमार माथुर, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, दुष्यन्त कुमार, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती, रघुवीर सहाय, त्रिलोचन, श्रीकान्त वर्मा, जगदीश गुप्त, शमशेर बहादुर सिंह का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। अन्य कवियों में भारतभूषण अग्रवाल, लक्ष्मीकान्त वर्मा, केदारनाथ सिंह, कैलाश वाजपेयी के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इन कवियों की रचनायें मुख्यतः 'अस्तित्ववाद' तथा 'आधुनिकतावाद' से प्रभावित हैं। अस्तित्ववादी यह मानकर चलते हैं कि मनुष्य अपने हर कार्य के लिए स्वयं उत्तरदायी होता है तथा उसके अनुभव महत्वपूर्ण होते हैं भले ही वे नकारात्मक ही क्यों न हों। इस कारण अस्तित्ववादी दर्शन के साथ- वैयक्तिकता, आत्मसंबद्धता, स्वतंत्रता, अजनबीपन, मृत्यु, त्रास, ऊब तथा संवेदना जुड़े हुए हैं और ये सभी नयी कविता के अंग भी हैं। 'आधुनिकतावाद' का संबंध पूंजीवादी विकास से है। वैज्ञानिक आविष्कारों के पश्चात पूरे विश्व में पूंजीवाद का बोलबाला हो गया। इसके द्वारा जो नये जीवन मूल्य विकसित हुए उससे आधुनिक जीवन शैली का जन्म हुआ फलस्वरूप साहित्य/कविता का इतिहास और परम्परा से अलगाव प्रारंभ हो गया, कविता में एक तटस्थता व्याप्त हो गयी और 'स्व' पर केंद्रित कवितायें लिखी गयीं। इसे व्यक्ति स्वातंत्र्य का नाम दिया गया। नयी कविता की कुछ विशेषतायें इस प्रकार देखी जा सकती हैं—

(i) कथ्य की व्यापकता –
(ii) विश्व मानव की प्रतिष्ठा
(iii) अनुभूति की प्रामाणिकता
(iv) ग्रामीण जीवन की ओर झुकाव
(v) तनाव, द्वन्द्व का शिकार मानव आदि के सुख की तलाश करता है।
(vi) अतिरंजित कल्पना (फैंटेसी) के द्वारा अभिव्यक्ति

ये विशेषतायें मात्र संकेत ही हैं। कला संबंधी विशेषताओं की चर्चा आगे की जायेगी। नयी कविता में आज के मनुष्य का दर्द एवं पीड़ा अत्यन्त संवेदनापूर्ण ढंग से प्रस्तुत हुई है। इसमें व्यक्ति और समाज का एकीकरण है, आशा - निराशा, निश्चय - अनिश्चय की झाँकियाँ हैं। इतना ही नहीं इसमें मनुष्य - मनुष्य के बीच तथा देश - देश के बीच जो दूरी है उसे पाट और बीच में आयी बाधक दीवारों को गिराकर मुक्त परिवेश की ओर बढ़ने की कामना भी उपलब्ध है।

भाव पक्ष के पश्चात नयी कविता के कला पक्ष की ओर जब हम दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि नयी कविता में सूक्ष्मकला विधान का अभाव है। नयी कविता में प्रतीक तथा बिम्ब - विधान को छोड़कर सपाटबयानी पर अधिक बल दिया गया है और लोकभाषा, नवीन शब्दों, लोकजीवन के नवीन प्रतीकों एवं छन्दों का उपयोग किया गया है। कुछ रचनाकारों ने शहरी परिवेश में व्याप्त जीवन को अपनी कविता का विषय बनाया है तो कुछ ने ग्रामीण जीवन से संबंधित विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। लोक - जीवन से जुड़ाव नयी कविता की प्रमुख विशेषता है। इस क्रम में - भभके, सीटी, ठिठुरन, हूँठ, फुनगियाना जैसे शब्द भी कविता में स्थान पा गये। नई कविता में गतिशीलता को कायम रखने के लिए छंदों के स्थान पर लय पर बल दिया गया। कवितायें कभी - कभी दुरूह भी हो गई हैं जैसे मुक्तिबोध की कविता। भवानीप्रसाद मिश्र ने अत्यंत सरल भाषा में नयी कविता के श्रेष्ठतम उदाहरण प्रस्तुत किये हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है -

'गुस्से के मारे
सारे के सारे
आसमान के तारे
टूट पड़े धरती के ऊपर
झर - झर - झर - झर ऊपर,
तो बतलाओ क्या होगा?'

इसके विपरीत मुक्तिबोध की कविता 'अंधेरे में' का उदाहरण देखें -

"बाहर शहर के, पहाड़ी के उस पार, तालाब...
अँधेरा सब ओर,
निस्तब्ध जल,
पर, भीतर से उभरती है सहसा
सलिल के तम - श्याम शीशे में कोई श्वेत आकृति
कुहरीला कोई बड़ा चेहरा फैल जाता है।"

आपलोग सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि किस कवि की कविता का अर्थ सहज ~~बोधगम्य~~ है। इसतरह कहा जा सकता है कि नयी कविता ने लोकजीवन की अनुभूति, सौन्दर्य बोध प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया है।

नवगीत – 'नयी कविता' के समानान्तर 'नया गीत', 'आज का गीत' 'आधुनिक गीत' की चर्चा छठे दशक के प्रारम्भ से ही होने लगी थी, लेकिन इसकी स्पष्ट घोषणा सन् 1957 ई० में इलाहाबाद के साहित्य-सम्मेलन की कविता गोष्ठी में वीरेन्द्र मिश्र द्वारा की गयी। उन्होंने कहा कि, "हिन्दी में नये गीत का जन्म हुआ है। यह नया गीत फार्म और कण्टेण्ट – दोनों ही पक्षों में समृद्ध हुआ है।" नवगीत की आधार-भूमि छायावादी गीतिकाव्य ही है। लेकिन, इसने परवर्ती काव्य-आंदोलनों — प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं नयी कविता के संसर्ग का भी पूरा लाभ उठाया। अतः नवगीत में इन सभी के संस्कार विद्यमान हैं। नवगीत में व्यक्ति अपने युग तथा समाज को खुली आँखों से देखता है तथा तद्विषयक अपनी प्रतिक्रिया को भी व्यक्त करता है। इसीलिए उसमें तद्युगीन परिवेश की अनुगूँज सुनाई पड़ती है। छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी कहा गया है किन्तु नवगीत में स्थूल एवं सूक्ष्म दोनों अपने अपने स्थान पर सुन्दर तरीके से व्यवस्थित हैं। नवगीत छायावादी काव्य की अपेक्षा बौद्धिकता, यथार्थता एवं लौकिकता की प्रमुखता है। इसके जनसाधारण में प्रचलित सामान्य भाषा तथा ग्रामीण एवं आंचलिक क्षेत्रों की शब्दावली का भी प्रयोग खुलकर किया गया है। जीवन-दृष्टि, विषय-वस्तु एवं अभिव्यंजना शैली दृष्टि से नवगीत में छायावादी कविता की तुलना में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है। वर्तमान का नवगीत कई दृष्टियों से छायावाद की अपेक्षा प्रगतिवाद के अधिक निकट है। प्रगतिवादी कवियों की ही भाँति नवगीतकारों ने भी जीवन से पलायन करने की अपेक्षा संघर्ष को अधिक महत्त्व दिया है। नवगीतकार मुख्यतः सामाजिक परिवर्तन एवं नव-निर्माण की बात सोचते हैं।

साठवें दशक के आसपास जब कविता – नई कविता के रूप में विकसित हो रही थी तब – गीत नवगीत के रूप ढलकर सामने आया। दूसरे शब्दों में कहें तो निराला की कविता सरस्वती वंदना की पंक्तियों की भाँति – 'नव गति, नव लय, ताल छंद नव' नवगीत की प्रमुख प्रवृत्ति है। इसके साथ-साथ नवगीत में नया कथन, नई प्रस्तुति, प्रगतिवादी सोच, नए उपमान, नए प्रतीक, नए बिम्ब, समकालीन समस्यायें और परिस्थितियाँ सब को मिलाकर नवगीत रचा गया। इस दृष्टि से देखें तो निराला भी हिन्दी के नवगीतकार ठहरते हैं।

'गीतांगिनी' के प्रकाशन काल (1950ई०) से नवगीत का प्रारंभ माना जाता है और उसके संपादकीय को नवगीत का घोषणा-पत्र माना जाना चाहिए। उन्होंने निराला की कुछ कविताओं और जयशंकर प्रसाद की कविता 'तुमुल कोलाहल कलह में मैं हृदय की बात रे मन' को हिन्दी के प्रारंभिक नवगीत माना है। माहेश्वर तिवारी के नवगीत 'नई नदी' की कुछ पंक्तियाँ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है -

हल्दी गई बदल गया अब गंगा जाएगी
नई नदी हमको अपने से ही तरसाएगी
बासमती से गंध मिठास रसीले गन्नों में तोड़ रही
रिश्ते-नाते खेतों के पत्रों में केलीपन की हर पहचान
मिटा दी जाएगी
चौसा लंगड़ा आम दशहरी बाहर जाएंगे
इनका असली स्वाद महज यादों में पाएंगे
बाजारों की हद घर तक पहुंचा दी जाएगी

नवगीत में नारी के सौन्दर्य की गाथा नहीं है और नहीं संयोग-वियोग की स्मृतियाँ हैं। यह व्यक्ति मात्र के जीवन की उठा-पटक, उत्पीड़न, गरीबी, साधनहीनता के संघर्ष की अभिव्यक्ति है।

इसकी भाषागत विशेषताओं में सर्वप्रथम उसकी सादगी है। किसी शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश का सहारा नहीं लेना पड़ता। आम आदमी भी नवगीत को समझ सके ऐसा आग्रह पाठकों की तरफ से न होकर कवियों की तरफ से है। नवगीत रचने के पीछे उनका उद्देश्य है कि समाज के बाधक कारकों को और उत्पन्न स्थितियों को पहचानकर उन्हें समाज को बताना, इंगित करना और उचित समाधान की ओर अग्रसर करना है। इसमें छंद का बंधन नहीं है किन्तु लयबद्धता अनिवार्यतः होनी चाहिए। निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि नवगीत छायावादी एवं प्रगतिवादी काव्यों की कई विशेषताओं से युक्त एक ऐसा काव्य है, जिसमें दोनों की आधारभूत चेतना है। इसकी अभिव्यंजना शैली व्यापक है तथा इसमें भावों की सूक्ष्मता, विविधता, ~~यथार्थता~~ लौकिकता का यथार्थ चित्रण है।' हिन्दी के प्रमुख नवगीतकारों के नाम इस प्रकार हैं - डॉ० शम्भुनाथ सिंह, गोपालप्रसाद सक्सेना 'नीरज' तथा रामावतार त्यागी। इनके अतिरिक्त रामानंद दोषी, बालस्वरूप राही, राजेन्द्र प्रसाद सिंह, कुंवर बेचैन तथा माहेश्वर तिवारी भी प्रमुख हस्ताक्षर हैं।

[illegible signature]
Mobile No- 9431881251